आचार्य विनोबा भावेः व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डा0 सीमा रानी* और कमल सिंह**

सारांश

प्रस्तुत शोध लेख आचार्य विनोबा भावे के जीवन व व्यक्तित्व के कुछ अनछुये पहलुओं पर विचार प्रस्तुत करता है। जीवन में किस तरह श्रम, समाज सेवा व गरीब तबकों के उद्धार के लिये वे सोचते थे, इन बातों को इस लेख में उजागर किया गया है। उनकी व्यक्तिगत जीवन शैली, समाज व देश के प्रति उनकी भावनाओं को इस लेख के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तावना

आचार्य विनोबा भावे का नाम गाँधी जी के समान उच्च कोटि के राश्ट्रवादियों में गिना जाता है। उन्होंने गांधी जी के रचनात्मक कार्य सम्बन्धी आन्दोलन के नेतृत्व का उत्तराधिकार संभाला था। गांधी जी ने सन् 1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में उन्हें पहला सत्याग्रही घोषित किया था। विनोबा भावे के विचारों से प्रभावित होकर जवाहर लाल नेहरू ने भी उनसे अपना मार्गदर्शन चाहा।

राजनीति, सामाजनीति तथा शिक्षा–नीति को लोकनीति की आत्मा प्रदान करने में सतत प्रयत्नशील संत विनोबा वस्तुतः अभिनव गांधी ही तो थे। अपनी क्षीण काया में लोक कल्याण की अजस्र गंगा को लिए चलने वाले संत विनोबा की ओर समस्त संसार की आशाभरी दृश्टि लगी रही। अपने भूदान और सर्वोदय आन्दोलन के कारण विनोबा भावे की प्रसिद्धि दूर तक फैली। अनेक विदेशी लोग उन्हें और उनके आन्दोलन को नजदीक से देखने समझने के लिए भारत आए।

विनोबा जी को अपने सेवा कार्यों के लिए सन् 1958 मेगसायसाय पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया, जिसके वे सच्चे हक़दार थे। वास्तव में देखा जाये तो वे ''विश्व मानव'' और 'विश्व नागरिक' थे। व्यक्ति–व्यक्ति में उन्होंने कभी भेद–भाव नहीं समझा तथा कभी भी किसी समूह वर्ग या राष्ट्र के प्रति अतिरिक्त निष्ठा अथवा वफादारी के रूप में उन्होंने विचार नहीं किया। उनके जीवन, उनके कार्य तथा विचारों से हम काफी–कुछ सीख सकते हैं।

विनोबा भावे का जन्म महाराष्ट्र राज्य के गांगोदा नामक ग्राम में हुआ था। 11 सितम्बर 1895 ई0को संत विनोबा की पवित्र जन्मतिथि होने का सौभाग्य प्राप्त है। विनोबा के पिता नरहरि पंत तथा माता रखुमाई दोनों ही अपनी सादगी, भक्ति–भावना तथा पवित्र आचरण के लिए अपने समाज में आदर और प्रतिश्ठा के पात्र थे। निश्ठावान तथा पावन चरित्र माता–पिता का स्पश्ट प्रभाव बालक विनोबा पर पड़ा। वे बचपन से ही निश्ठावान तथा सदाचारी थे। अध्ययन–शीलता तथा आत्मविश्वास के तो विनोबा अवतार ही रहे। सादगी तो उनके जीवन का एक अंग बन गई है।

विनोबा की प्रारंभिक शिक्षा–दीक्षा अपने गाँव में ही हुई। प्रारंभिक वर्गों में ही उनकी तीव्र बुद्धि, निश्ठा, निर्भीकता तथा गुरू भक्ति का परिचय मिलने लगा। बालक विनोबा अपने अध्ययन में तथा विद्यालय के क्रियाशीलनों में समान रूप से आस्थावान थे। उन्होनें हाईस्कूल तक की शिक्षा को पूरा किया। इसी अवधि में उन्होनें अपनी अनुपम अध्यनशीलता तथा परिश्रमशीलता का परिचय दिया। उन्होनें अपने हाईस्कूल के विद्यार्थी जीवन में ही बड़ौदा के विशाल केन्द्रीय पुस्तकालय की समस्त पुस्तकों को पढ़ डाला। इससे उनकी अप्रतिम अध्ययनशीलता तथा प्रबल ज्ञान पिपासा का परिचय मिलता है। खेल–कूद, भाषण–कला तथा सामाजिक क्रियाशीलनों में भी उनकी गति प्रथम कोटि की थी। विनोबा विद्यालय की परीक्षाओं में अपनी कक्षा में सर्वप्रथम आते थे। सच कहा जाये तो विनोबा के व्यक्तित्व का सम्यक विकास हो रहा था। वस्तुतः विनोबा के ऊपर पवित्र पारिवारिक वातावरण तथा आचरणवान माता–पिता का अमिट प्रभाव सतत कार्यशील था।

विनोबा जी की नियमित शिक्षा वस्तुतः हाईस्कूल तक ही चली। परंपरागत शिक्षा व्यवस्था एवं परीक्षा नीति के विरूद्ध उनका मन विद्रोह कर उठा तथा

*ऐसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्षा शिक्षा विभाग, डी0ए0के0 कालिज, मुरादाबाद (उ0प्र0)
**शोधार्थी, मेवाड़ विश्वविद्यालय गंगरार, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए तैयार होने पर भी उन्होनें रास्ता बदल दिया। भारत के अन्य विद्यापीठों की यात्रा करते हुए उन्होंने संस्कृत, फारसी तथा धर्मशास्त्र में अगाध पांडित्य प्राप्त कर लिया। उन्होंने सभी धर्मों के मूल ग्रन्थों मानवीय एकता एवं सामाजिक समन्वय के तत्व का अन्वेशण किया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ वर्शों बाद दक्षिण भारत के तेलंगाना क्षेत्र में 'उग्र साम्यवादियों के नेतृत्व में भूमि–विद्रोह उठ खड़ा हुआ। उन्होनें यहीं से भूदान यज्ञ प्रारम्भ किया तथा वर्शों पहले तक समस्त भारत की पैदल यात्रा की। इस आन्दोलन में उन्होंने लाखों एकड़ जमीन दान में प्राप्त की तथा उसे भूमिहीनों में वितरित किया। इस प्रकार भूदान के द्वारा भूमि पर से व्यक्तिगत स्वामित्व की स्वच्छेया समाप्ति विनोबा का अन्तिम लक्ष्य था। इस आन्दोलन को प्रेम, त्याग, सद्भावना, सहयोग तथा समता के आधार पर चलाया जा रहा था। आज भूदान आन्दोलन विश्व की दृश्टि में एक आश्चर्यमय नवीन प्रयोग माना जाता है।

अन्तिम दिनों में विनोबा जी पेप्टिक अल्सर से अस्वस्थ रहे। अतः तब उन्होंने पदयात्रा को त्याग दिया। भूदान–यज्ञ की निश्चित सफलता के लिए सक्रिय तथा प्रयत्नशील अवश्य रहे।

भारत की एक ऐसी महान आत्मा, जिसमें प्राचीन और नवीन विचारधाराओं का अनोखा संगम था.... .जिसका उद्देश्य देश सेवा और समाज सेवा था..... इस संसार से 15 नवम्बर 1982 को विदा हो गई, किन्तु उसके सद्कर्मों और सद्वचनों का आभा मण्डल आज भी देशवासियों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है।

व्यक्तित्व

विनोबा जी जीवन के सभी क्षेत्रों में सत्य, अहिंसा एवं प्रेम के सिद्धान्तों को प्रविश्ट कराना चाहते थे। सत्य को जीवन का मूलमंत्र वे मानते थे। अहिंसा को मानव–धर्म के रूप में समाज द्वारा स्वीकृत किये जाने के वे पक्षपाती थे। वे मानव–मात्र ही नहीं, जीव–मात्र को प्रेम की दृश्टि से देखते थे।

वे अपने समस्त व्यक्तिगत कार्य स्वयं ही करते थे। वे मानते थे कि पूर्ण मानव बनने तथा श्रम के महत्व को समझने के लिए परिश्रम तथा स्वावलंबन आवश्यक था। जीवन में संयम तथा अनुशासन के लिए नियमितता का पालन करना आवश्यक है। उन्होंने भारतीय संस्कृति के विकास पोशण एवं संरक्षण के लिए संस्कृत तथा हिन्दी का प्रचार–प्रसार आवश्यक माना था। भारतीय संस्कृति के समन्वयवादी दृश्टिकोण का ही उन्होंने प्रतिपादन किया। उन्होंने मानव–संसार में प्रचलित सभी धर्मों को महान एवं समान बताया है। उनकी दृश्टि में सभी धर्म मानव को मुक्ति दिलाने वाले हैं। अतः धार्मिक सहिश्णुता के आधार पर ही हम सभी धर्मों की अच्छाई देखने में समर्थ हो सकते हैं।

सर्वोदय में वे सबका उदय चाहते थे। सर्वोदय में शोशण–विहीन, वर्ग–हीन समाज की स्थापना उनका लक्ष्य था। इसके लिए ही वे भू–दान, ग्राम–दान, सम्पत्ति–दान एवं जीवन–दान प्रभृति आन्दोलनों को चला रहे थे। इस प्रकार समस्त मानव–समाज की कल्याण–साधना में ही सर्वोदय निहित है।

विनायक का यह स्वभाव बचपन में ही पक्का हो गया था कि वे पहले तो गलती न करते थे और यदि उनसे गलती हो भी जाती थी तो वे सहर्श उसे स्वीकार कर लेते थे। अपनी गलती का दंड भुगतने में उन्हें तनिक भी संकोच न होता था। बाल्यकाल से ही विनायक को प्रकृति के प्रति गहरा आकर्शण था। वे बड़ी घुमक्कड़ प्रकृति के बालक थे। वे दुबले–पतले होने पर भी घूमने–फिरने में उनकी विशेश रूचि थी। वे प्रायः कहा करते थे कि दस–पन्द्रह मील खुली हवा में घूम लेने से मन, बुद्धि और शरीर तरोताज़ा हो जाते हैं। विनायक को बुरी आदतों से बड़ी घृणा थी।

एक बार वे सोचने लगे कि जब मुझे कोई नौकरी नहीं करनी और कोई व्यापार–व्यवसाय भी नहीं करना तो इस प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने का क्या औचित्य?यदि मैं इसी प्रकार निरन्तर उच्च श्रेणी में परीक्षाएं पास करता गया और सर्टिफिकेट जमा करता गया तो एक दिन अवश्य ही सांसारिक मोह–पाश में आबद्ध हो जाना पड़ेगा। ये सर्टिफिकेट समाप्त करके मुझे हर प्रकार के मोह–बन्धन से मुक्त हो जाना चाहिए। माता उन्हें गृहस्थाश्रम और ब्रह्मचर्य के बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए। प्रायः कहा करती थीं– 'विन्या! गृहस्थाश्रम को ठीक प्रकार से निभाने में केवल एक पीढ़ी का उद्धार होता है, लेकिन उत्तम ब्रह्मचर्य का पालन करने से सात पीढ़ियों का उद्धार होता है।'

उन्होनें अनुभव किया कि हमारा देश ग्रामों का देश है और ग्रामों की उन्नति के बिना देश उन्नति नहीं कर सकता। ग्रामों की स्वयंभू जनता महादेव है। वह

ग्रामों में ही रहेगी। अतः यदि हम इस महादेव के पूजक बनना चाहते हें तो हमें ग्रामों के और उसके पास ही जाना होगा। ग्रामों में जाते समय हमारे मन में कोई हीनता का भाव नहीं आना चाहिए और न उसमें कोई थकावट का ही अनुभव करना चाहिए। जिस प्रकार भक्त बड़ी खुशी से भगवान के मन्दिर की प्रदक्षिणा लगाता है, ठीक उसी प्रकार हमें भी गांवों का चक्कर बड़ी खुशी के साथ लगाना चाहिए।

लोकसेवा हमारी मूर्तिपूजा है। पाँच–पच्चीस गांवों का संग्रह हमारा महामन्दिर है। गांवो में क्या–क्या है, इसकी हम फेहरिस्त बना लें, मन पर भी.....कागज पर भी। फेहरिस्त हम जनसेवकों को दें, वे देवता का स्वरूप समझ लें। जनसेवक जान लें कि देवता का स्वरूप क्या है? चेहरा कैसा है?भाव कौन से हैं?उनकी रूचि और अरूचि की वस्तुएं कौन–सी हैं?उसका नैवेद्य क्या हो गया है, और उस पर कौन–से पुश्प चढ़ते हैं?परिचय हुए बिना पूजा न बनेगी। ऐसा न करने पर शिव पर तुलसी होगी और विश्णु पर बेलपत्र।

हिन्दू–मुस्लिम एकता को अंग्रेज अपने लिए सबसे घातक समझते थे, जबकि विनोबा जी इन दोनों संप्रदायों की एकता में ही देश का विकास देखते थे। उन्होंने अरबी में लिखा कुरान–ए–पाक पढ़ा था और उसके बहुत अंश उन्हें कंठस्थ भी थे। इस प्रकार इस्लाम धर्म की बहुत–सी मूलभूत जानकारियां उन्हें थीं।

यदि ईश्वर ने मुसलमानों को बुरा ही पैदा किया होता तो उनकी एक कोड़ी भी कीमत न रहती। आप मुसलमानों में जाते नहीं हैं, उनके साथ घुल–मिलकर रहते नहीं हैं, उनसे मित्रता स्थापित करने का प्रयत्न नहीं करते, क्या यह सब अच्छा है? मुसलमान भी अच्छे हैं। पहले महायुद्ध के समय यदि कैदियों के साथ किसी ने अच्छा व्यवहार किया तो तुर्किस्तान ने? यह बात पूरे यूरोप ने स्वीकार की थी और इसके लिए उसकी प्रशंसा की थी।

योगः कर्मसु कौशलम के अर्थ में विनोबा सच्चे योगी हैं। उन्हें विचार, वाणी और आचार में जितना एक राग है, वैसा एक राग बहुत कम लोगों में होगा, इसीलिए उनका जीवन एक मधुर संगीतमय है।

उन्होंने लोगों को अमन–चैन कायम रखने का संदेश देते हुए कहा– 'इस्लाम का संदेश बहुत अच्छा है। यह धनी–निर्धन में अन्तर नहीं करता। इसमें धन पर ब्याज लेने की मनाही है। इस्लाम आदर्श प्रजातंत्र का ढाँचा प्रस्तुत करता है। मैं दावा करता हूँ कि मैं हिन्दू ही नहीं मुस्लिम भी हूँ और इसाई भी।' डाकुओं की समस्याओं पर भाशण करते हुए उन्होंने कहा– ''कोई भी मनुश्य जन्मजात डाकू नहीं होता। डाकू समस्या के मुख्यतः तीन कारण हैं– गरीबी, आपसी दुश्मनी और पुलिसिया भेदभाव। एक चौथा कारण भी है, वह है दलगत राजनीति और चुनाव। मूलरूप से डाकू सीधे, साहसी और निर्भीक प्रकृति के होते हैं। इनके साथ अच्छा और न्यायपूर्ण व्यवहार अपनाकर भला व्यक्ति बनाया जा सकता है।

विनोबा जी ने अपनी प्रशंसा पर टिप्पणी करते हुए कहा था– ''जो समाज सेवा मैं कर रहा हूँ उसके लिए मेरी प्रशंसा न करो और न ही मेरे गुण गाओ। मैं कोई बलिदान नहीं कर रहा हूँ। वास्तव में यह सब कार्य मैं अपने लाभ के लिए कर रहा हूँ। मेंने ईश्वर की खोज में अपने घर परिवार का परित्याग किया था। अब मैं जानता हूँ कि गरीबों और दलितों की सेवा ही ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग है।''

कृतित्व

वांई में विद्यार्थी मंडल नामक एक संस्था की स्थापना की। उसमें एक वाचनालय खोला और उसकी सहायता के लिए चक्की पीसने वालों का एक वर्ग शुरू किया। उसमें मैं और दूसरे पन्द्रह विद्यार्थी चक्की पीसते थे। जो मशीन की चक्की पर पिसवाने ले जाते, उनका काम हम एक पैसे में दो सेर के हिसाब से करते और ये पैसे वाचनालय को देते। पैसे वालों के लड़के भी इस वर्ग में शामिल हुए थे। हम सब हाईस्कूल में पढ़ने वाले ब्राह्मणों के लड़के होने के कारण सब हमें मूर्ख ही समझते थे। इतने पर भी यह वर्ग कोई दो मास चला और वाचनालय में चार सौ पुस्तकें इकट्ठी हो गई।

गणित विनायक का मनचहा विशय था। इनसे भी ऊँची कक्षाओं के विद्यार्थी इनके पास अपना प्रश्न एक कागज पर लिखकर दे जाते और आप खाली समय में उसका हल पर्ची के दूसरे ओर कर देते। इनकी एक जेब में तो ऐसे प्रश्नों की पर्चियाँ रहती थीं जो हल करनी होती। दूसरी जेब में हल की हुई पर्चियाँ रहती थीं। एक बार एक प्रश्न गणित के अध्यापक को समझ में नहीं आ रहा था। उसने भी सुना था, विनोबा बड़ी अच्छी गणित जानते हैं। उसने विनोबा से वही प्रश्न हल करने को कहा। विनोबा ने दृढ़तापूर्वक कहा, ''श्रीमान आप उत्तर

ठीक निकाल रहे हैं, लेकिन पुस्तक में उत्तर सही नहीं छपा है।''

विनोबा जी सोते समय अपने बिस्तर में से लिहाफ निकाल देते और केवल कम्बल बिछाकर ही भूमि पर सोते। माँ के पूछने पर कहते ''मेरी अच्छी माँ! मुझे ब्रह्मचारी बनना है न, इसीलिए अभी से कठोर जीवन का अभ्यास डालना चाहिए।'' माँ कहती देखो पुत्र जो ब्रह्मचारी रहता है, वह अपनी सात पीढ़ियों का उद्धार करता है, परन्तु जो सच्चा गृहस्थ होता है, वह केवल एक ही पीढ़ी का उद्धार करता है।'' किशोरावस्था में ही विनायक ने आजन्म ब्रह्मचारी रहने का संकल्प कर लिया। बाद में विनायक ने किशोरावस्था में ही भगवान की खोज में परिवार का परित्याग करने का निर्णय लिया।

कुछ विचार कर वे सारे सर्टिफिकेट ले आए। उस समय उनकी माता चूल्हे पर भोजन बना रही थीं। वे अपनी माँ के पास आकर बैठ गए। चूल्हे में आग जल रही थी। विनायक ने एक सर्टिफिकेट निकाला और चूल्हे में झोंक दिया। माँ ने उन्हें सर्टिफिकेट जलाते देखा तो आश्चर्यचकित होते हुए बोली– ''विन्या! यह क्या कर रहा है?'' ''अपने सर्टिफिकेट जला रहा हूँ माँ।'' कहते हुए विनायक ने एक और सर्टिफिकेट आग में डाल दिया और हाथ तापने लगे।

''मगर क्यों?''

''माँ! अब मुझे इनकी आवश्यकता नहीं।''

''अरे! अब आवश्यकता नहीं... फिर भी पड़े रहें तो क्या हर्ज है?''

''माँ! पड़े रहने का अर्थ यही है कि भविष्य में कभी न कभी इनका उपयोग किया जाये, जबकि मैं ऐसा नहीं चाहता। मैं हर प्रकार से बन्धन से विमुक्त होकर समाज की सेवा करना चाहता हूँ।''

विनोबा कभी भी शारीरिक श्रम में पीछे नहीं रहते थे। उन्हें श्रम का चाहे कैसा भी कठोर कार्य मिल गया, उसे वे पूरी तन्मयता और श्रृद्धा से करते थे। यद्यपि उनका शरीर दुबला पतला था, तथापि उनमें प्रबल इच्छाशक्ति थी। इसके सहारे ही वे कोई भी कार्य सम्पन्न करने का साहस रखते थे।

पंजाब के अमृतसर जिले में जलियांवाला बाग कांड के बाद देश भर में क्रान्ति की ज्वालाएं भड़कने लगीं थीं। अगस्त 1920 में गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन शुरू कर दिया। जिस समय आन्दोलन चल रहा था, तब विनोबा जी राश्ट्रीय विद्यालय के अध्यापन में व्यस्त थे। उस समय किसी ने उनसे कहा – ''आपके जैसे शक्तिशाली मनुश्य की राश्ट्रीय आन्दोलन में बड़ी आवश्यकता है।'' विनोबा जी ने उत्तर दिया– ''मैं आगामी पीढ़ी तैयार कर रहा हूँ और मेरा काम इस पीढ़ी में नहीं, आने वाली पीढ़ी में है।''

विनायक में अन्य भाषाएं भी सीखने की बहुत इच्छा थी। अपनी मातृभाषा मराठी के अतिरिक्त उन्होंने गुजराती, हिन्दी, इगंलिश, फ्रैंच व संस्कृत भी सीख डाली थी। बाद में 'स्वतंत्रता' आन्दोलन में दक्षिण भारत की बैलोट जेल में विनोबा भावे ने जेल प्रवास के समय तमिल, तेलगू, कन्नड व मलयालम भी सीखी। उन्होंने गरीब व शोशित वर्ग के आर्थिक उत्थान के कार्य के दौर मे ंखादी तथा कुटीर उद्योगों का अपने कार्यक्रमों में जमकर प्रयोग किया। यही उद्योग विनोबा के जन सेवा अभियान के मुख्य अंग बने।

विनोबा जी का समस्त जीवन रचनात्मक कार्यो की श्रृंखला ही तो था। उन्होंने रचनात्मक कार्य को अपना जीवन–क्रम बना लिया। इतना ही नहीं, वे तो रचनात्मक कार्य में ही देश–सेवा तथा ईश्वरोपासना मानते थे। समाज–सेवा, हरिजनोद्धार, खादी–कार्य, साम्प्रदायिक सद्भावना–कार्य आदि रचनात्मक कार्य के उदाहरण हैं। नालवाड़ी ग्राम में एक आश्रम बनाकर ग्राम सेवा के कार्य को आगे बढ़ाया गया। इस आश्रम के कार्यकर्ता चौदह दिनों तक ग्राम ग्राम घूमकर रचनात्मक कार्यो को गति प्रदान करते और पन्द्रहवें दिन सभी केन्द्रीय आश्रम में आकर अपनी–अपनी समस्याओं और उपलब्धियों पर विस्तार से चर्चा करते। ग्राम–सेवा का यह कार्य दो वर्शों तक इसी प्रकार चलता रहा, फिर कार्यकर्ताओं को ग्रामों में ही छोटे–छोटे आश्रम स्थापित करके वही रहने के निर्देश दिये गये।

विनोबा जी ने अस्पृश्यता निवारण, दबे–कुचले वर्ग की सेवा–सुश्रुशा, शिक्षा का प्रसार आदि कार्यो के अलावा कुश्ठ सेवा का कार्य भी बड़े मनोयोग से किया।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

टंडन, विश्वनाथ : आचार्य विनोबा भावे, बिल्डर्स ऑफ मॉडर्न इंडिया, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण : 1992 ।

तरूण, डॉ0 हरिवंश : 'विश्व के महान शिक्षाशास्त्री' प्रकाशन संस्थान 4715/21, दयानन्द मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–110002, संस्करण : सन् 2008

तिवारी, पंकज : 'आचार्य विनोबा भावे' आर0के0 पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स एल–45, गली नं0 5, शिवाजी मार्ग करतार नगर, दिल्ली–110053, संस्करण : सन् 2006 ।

देवी, कलावती : थॉट्स ऑफ सम इंडियन थिंकर्स ड्यूरिंग दि पोस्ट–रिनेसेन्स पीरियड, पी0एच0डी0, एजूकेशन, अवध यूनिवर्सिटी, 1982 ।

पंड्या, जयंत : 'गांधी जी और उनके शिश्य' नेशनल बुक ट्रस्ट, इडिया ए–5, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली–110016, संस्करण : पहला–2005

बुच, बॉले : दि डिजर्टेशन ऑफ पीस

भावे, आचार्य विनोबा : 'दि एसेन्स ऑफ दि कुरान' सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण : आठवॉ–2010

राजस्वी, एम0आई0 : 'विनोबा भावे' मनोज पब्लिकेशन्स, 1583–84, दरीबा कलां, चॉदनी चौक, दिल्ली–6, संस्करण–पांचवा : 2011 ।

स्वामी, एन0कृश्णा : 'हण्डरेड फैक्टस ऑफ विनोबा' साहित्य मन्दिर प्रकाशन, बंगलौर, संस्करण, : 2001 ।

सिंह, प्रेम लाल एवं सिंह, डॉ0 सुधा : 'भारत की महान विभूतियां' टी0एस0 विश्ट तक्षशिला प्रकाशन, 98–ए, हिन्दी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली–110002, संस्करण : प्रथम, 2005 ।